अध्याय 7

अगुवों की भेंट

भजन 119 के अलावा इब्रानी बाइबल में यह सबसे लंबा अध्याय है, जो निवास के पूरा होने पर इस्राएल के गोत्रों के अगुवों द्वारा परमेश्वर को दिए गए भेंटों का वर्णन करता है। इस अध्याय को उसके ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

गिनती 7:1 एक ऐसे अवसर की समीक्षा करता है जो जनगणना से एक महीने पहले हुआ था जिसके साथ पुस्तक का आरम्भ होता है (1:1, 2)। वास्तव में, पुस्तक का यह पूरा भाग 7:1-9:23, उस समय से सम्बन्धित है जब तम्बू का निर्माण किया गया था (देखें *परिशिष्ट: गिनती 7 और 9 में समय के क्रम के सूचक दिए गए हैं,* पृष्ठ 160)। ये तीन अध्याय विशेष रूप से एकसाथ लगभग निवास और वहाँ केन्द्रित आराधना के बारे में बताते हैं:

7:1-88	*भेंट* निवास को खड़ा किए जाने के बाद लाया गया।
7:89	निवास के भीतर *परमेश्वर की मूसा से बातचीत* (प्रायश्चित के ढकने पर से)।
8:1-4	*दीपक* निवास को उजियाला देने के लिये।
8:5-26	*लेवियों का अभिषेक* निवास की सेवाटहल करने के लिये।
9:1-14	*फसह का मनाया जाना,* निवास को शामिल करते हुए।
9:15-23	*निवासस्थान पर अग्निमय बादल* निवास पर परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिये।

तथ्य यह है कि यह भाग उस दिन के संदर्भों के साथ शुरू होता है और समाप्त होता है जब तम्बू का निर्माण किया गया था (7:1; 9:15) जो दोनों बातों को बताता है कि इसे एक सम्पूर्ण रूप से देखा जाना चाहिए और यह कि इस भाग में निवास रुचि का प्राथमिक केन्द्र है।

इस अलगाव का कारण क्या है? अध्याय 1 में लेखक ने जनगणना के साथ क्यों शुरू किया, जब जनगणना 7 से 9 अध्यायों की घटनाओं के बाद तक नहीं लिया गया था? इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसा करना उसके उद्देश्यों के अनुकूल था। इसके अलावा, यह देखा गया है कि, सामान्य रूप से, पहले नौ अध्याय तीन विषयों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं:

गिनती 1-4 संगठन
गिनती 5; 6 शुद्धिकरण
गिनती 7-9 आराधना

अध्याय 7 से 9 अध्यायों का ध्यान आराधना पर है, जो निवास पर वर्णन से स्पष्ट पता चलता है। इसके अलावा, इस भाग में इस्राएल के दूसरे फसह के मानने का एक विवरण शामिल है (क्योंकि प्रारम्भिक पहला फसह मिस्र में मनाया गया था) और इस तथ्य को जोड़ता है कि उस फसह में भाग लेने में असमर्थ लोगों के लिये एक महीने बाद "उसके बदले" फसह का पर्व नियत समय में उपलब्ध किया गया था।

यह सम्भव है कि अध्याय 9 में फसह का मानना इस भाग की प्राथमिक चिन्ता है। वेदी और लेवियों का समर्पण (लैव्य. 8 और 9 में वर्णित याजकों के अभिषेक के अलावा) को फसह के पहले रखा जाना था। इसका अभिप्राय यह होगा कि दूसरे महीने[1] के चौदहवें दिन "नियत" फसह का मानना जनगणना के *बाद* हुआ था, और उस अवसर का संदर्भ सामयिक क्रम में होगा। "नियत" फसह के लिये की जाने वाली घटनाओं की समीक्षा को पाठक को समझने में सहायता करने के लिये पृष्ठभूमि की जानकारी के रूप में शामिल किया गया था कि क्यों कुछ लोगों ने पहले महीने के बजाय दूसरे महीने में फसह का पर्व मनाया।

अधिक सामान्य शब्दों में, अध्याय 7 से 9 अध्यायों में आराधना पर जोर यह स्पष्ट करता है कि प्रतिज्ञा के देश को जाने की तैयारी करने वाले लोगों के रूप में इस्राएल की सफलता पूरी तरह से उनके संगठन या उनके शुद्धिकरण पर निर्भर नहीं होगी। यह परमेश्वर के साथ उनके रिश्ते पर निर्भर करेगा, जो उनके बीच में निवास की उपस्थिति और परमेश्वर की आराधना में उनकी भागीदारी द्वारा चिह्नित किया गया है।[2]

निवास को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने के लिये गाडियों और बैलों की भेंट (7:1-9)

**1फिर जब मूसा ने निवास को खड़ा किया और सारे सामान समेत उसका
अभिषेक करके उसको पवित्र किया और सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक
करके उसे पवित्र किया, 2तब इस्राएल के प्रधान जो अपने अपने पितरों के घरानों
के मुख्य पुरुष, और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम पर नियुक्त थे,
3वे यहोवा के सामने भेंट ले आए, और उनकी भेंट छ: छाई हुई गाड़ियाँ और बारह
बैल थे, अर्थात् दो-दो प्रधान की ओर से एक एक गाड़ी, और एक-एक प्रधान की
ओर से एक-एक बैल; इन्हें वे निवास के सामने यहोवा के समीप ले गए। 4तब
यहोवा ने मूसा से कहा, 5"उन वस्तुओं को तू उनसे ले ले कि मिलापवाले तम्बू की
सेवकाई में काम आएँ, इसलिये तू उन्हें लेवियों के एक एक कुल की विशेष सेवकाई
के अनुसार उनको बाँट दे।" 6अत: मूसा ने वे सब गाड़ियाँ और बैल लेकर लेवियों**

को दे दिए। [7]गेर्शोनियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उसने दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए; [8]और मरारियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उसने चार गाड़ियाँ और आठ बैल दिए; ये सब हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में किए गए। [9]परन्तु कहातियों को उसने कुछ न दिया, क्योंकि उनके लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वे उसे अपने कंधों पर उठा लिया करें।

आयत 1. अध्याय 7 के पहले नौ आयत उस दिन की चर्चा करते हैं **जब मूसा ने निवास को खड़ा किया**। यह जानकारी निर्गमन 40 और लैव्यव्यवस्था 8 में जो लिखा गया है, उसका पूरा करता है। निर्गमन 40:2, 17 वर्णन करता है कि यह मिस्र को छोड़ने के "दूसरे वर्ष" के पहले महीने का पहले दिन हुआ था। मूसा ने **... अभिषेक करके** निवास को **पवित्र किया और अपने सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक किया** (देखें लैव्य. 8:10, 11)। उसने निर्गमन 30:22-33 में वर्णित पवित्र तेल का उपयोग किया था।

आयतें 2, 3. इस्राएल के प्रधान जो **अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष** थे, उन्होंने इस अवसर पर बलिदान चढ़ाए। गोत्रों के प्रधान भी **यहोवा के सामने भेंट ले आए**, जिसमें **छः छाई हुई गाड़ियाँ और बारह बैल थे, अर्थात् दो-दो प्रधान की ओर से एक एक गाड़ी, और एक-एक प्रधान की ओर से एक-एक बैल शामिल था।** इब्रानी शब्द עֲגָלָה *('अगालाह)* दो पहिया या चौपहिया वाहन हो सकता है; कभी-कभी उत्तरवर्ती वाहन, शामियाना से ढका होता था। सामान्यतया एक जोड़ी बैल इन वाहनों को खींचते थे।[3] इस पाठ में, छः गाड़ियाँ (चाहे ठेला या चौपहिया वाहन) और बारह गोत्रों के प्रधानों द्वारा दिए गए बारह बैलों को **निवास के सामने** लाया जाता था।

आयतें 4-8. परमेश्वर के निर्देशानुसार, मूसा इन भेंटों को स्वीकार करता था और वह **उन्हें लेवियों के एक-एक कुल की विशेष सेवकाई के अनुसार उन को बांट** देता था। **मेरारियों को चार गाड़ियाँ और आठ बैल दिए**, जिनका कार्य निवास स्थान के तम्बू से संबंधित सबसे भारी वस्तुओं को ढोना था। **गेर्शोनियों को दो गाड़ी और चार बैल दिए**, जो निवास स्थान के कम भार वाले वस्तु ढोते थे। इस प्रकार, गाड़ी और बैल, मरारियों एवं गेर्शोनियों को निवास स्थान की वस्तुओं को जंगल में इधर-उधर ले जाने में सहायता करते थे।

आयत 9. चूँकि भेंट, लेवियों के प्रत्येक परिवार को उनके आवश्यकतानुसार बांट दिए जाते थे, तो **कहातियों** को कोई गाड़ी नहीं मिली। उनको निवास स्थान की अति पवित्र वस्तुओं को ढोने की जिम्मेदारी थी, और यह उनको उन्हें अपने **कंधों पर** डंडों पर, जो इस उद्देश्य के लिए बनाए गए थे, की सहायता से, ढोना था। परमेश्वर की विधियों के विरूद्ध जब वाचा **के** संदूक को गाड़ी पर ले जाया रहा था और जब उज्जाह ने उस पर हाथ लगाया तो वह मारा गया था (2 शमूएल 6:6, 7)।

वेदी का अभिषेक करने के लिए भेंट (7:10-88)

10फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उसके संस्कार की भेंट वेदी के
समीप ले जाने लगे। 11तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वेदी के संस्कार के लिए प्रधान
लोग अपनी-अपनी भेंट अपने-अपने नियत दिन पर चढ़ाएँ।”
12इसलिए जो पुरुष पहले दिन अपनी भेंट ले गया वह यहूदा गोत्रवाले
अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था; 13उसकी भेंट यह थी, अर्थात् पवित्रस्थान के
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल
चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे थे;
14फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 15होमबलि के लिए एक
बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 16पापबलि के लिए एक
बकरा; 17और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीनादाब के पुत्र नहशोन की यही भेंट थी।
18दूसरे दिन इस्साकार का प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल भेंट ले आया; 19वह
यह थी, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे; 20फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
21होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;
22पापबलि के लिए एक बकरा; 23और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच मेढ़े,
और पाँच बकरे, और एक एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूआर के पुत्र नतनेल की
यही भेंट थी।
24तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब यह भेंट ले आया,
25अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से
सने हुए मैदे से भरे थे; 26फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
27होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;
28पापबलि के लिए एक बकरा; 29और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच मेढ़े,
और पाँच बकरे, और एक एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। हेलोन के पुत्र एलीआब
की यही भेंट थी।
30चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर यह भेंट ले आया,
31अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से
सने हुए मैदे से भरे थे; 32फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
33होमबलि के लिए एक बछड़ा और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 34पापबलि के लिए एक बकरा; 35और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। शदेऊर के पुत्र
एलीसूर की यही भेंट थी।

36पाँचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल यह भेंट ले
आया, 37अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे; 38फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
39होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 40पापबलि के लिए एक बकरा; 41और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूरीशद्दै के पुत्र
शलूमीएल की यही भेंट थी।
42छठवें दिन गादियों का प्रधान दूएल का पुत्र एल्यासाप यह भेंट ले आया,
43अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से
सने हुए मैदे से भरे थे; 44फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
45होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 46पापबलि के लिए एक बकरा; 47और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। दूएल के पुत्र
एल्यासाप की यही भेंट थी।
48सातवें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा यह भेंट ले
आया, 49अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे; 50फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
51होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;
52पापबलि के लिए एक बकरा; 53और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच मेढ़े,
और पाँच बकरे, और एक एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीहूद के पुत्र
एलीशामा की यही भेंट थी।
54आठवें दिन मनश्शेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेंट ले
आया, 55अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे; 56फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
57होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 58पापबलि के लिए एक बकरा; 59और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। पदासूर के पुत्र
गम्लीएल की यही भेंट थी।
60नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेंट ले
आया, 61अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे; 62फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
63होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 64पापबलि के लिए एक बकरा; 65और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच

मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। गिदोनी के पुत्र
अबीदान की यही भेंट थी।
66दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर यह भेंट ले आया,
67अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से
सने हुए मैदे से भरे थे; 68फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
69होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 70पापबलि के लिए एक बकरा; 71और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीशद्दै के पुत्र
अहीएजेर की यही भेंट थी।
72ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का पुत्र पजीएल यह भेंट ले
आया, 73अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे; 74फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
75होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 76पापबलि के लिए एक बकरा; 77और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। ओक्रान के पुत्र
पजीएल की यही भेंट थी।
78बारहवें दिन नप्तालियों का प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेंट से आया,
79अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से
सने हुए मैदे से भरे थे; 80फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;
81होमबलि के लिए एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का
बच्चा; 82पापबलि के लिए एक बकरा; 83और मेलबलि के लिए दो बैल, और पाँच
मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। एनान के पुत्र अहीरा
की यही भेंट थी।
84वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल के प्रधानों की ओर से उसके संस्कार की
भेंट यही हुई, अर्थात् चाँदी के बारह परात, चाँदी के बारह कटोरे, और सोने के
बारह धूपदान। 85एक एक चाँदी का परात एक सौ तीस शेकेल का, और एक एक
चाँदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था; और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से ये
सब चाँदी के पात्र दो हज़ार चार सौ शेकेल के थे। 86फिर धूप से भरे हुए सोने के
बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से दस दस शेकेल के थे, वे सब
धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे। 87फिर होमबलि के लिए सब मिलाकर
बारह बछड़े, बारह मेढ़े, और एक-एक वर्ष के बारह भेड़ी के बच्चे, अपने अपने
अन्नबलि सहित थे; फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे; 88और मेलबलि के लिए
सब मिला कर चौबीस बैल, और साठ मेढ़े, और साठ बकरे, और एक-एक वर्ष के
साठ भेड़ी के बच्चे थे। वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके संस्कार की भेंट यही
हुई।

आयतें 10, 11. इस अध्याय का अधिकतम भाग, **वेदी के अभिषेक** के समय, बारह गोत्रों के **प्रधानों** ने किस प्रकार **संस्कार की भेंट वेदी के समीप** लाये, के वृतांत का विश्लेषण करता है। इससे संबंधित क्रिया के साथ, इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद 7:10, 11, 84, 88 में **अभिषेक** (חֲנֻכָּה, *हेनुक्काह)* किया गया है, की संरचना का अभिप्रेत उद्देश्य की प्रथम प्रयोग को निर्दिष्ट करता है। इस प्रकार सुलैमान का मन्दिर (1 राजा 8:63; 2 इतिहास 7:5) और इसकी वेदी के समान (2 इतिहास 7:9) किसी घर (व्यव. 20:5), शहरपनाह (नहेम्य. 12:27) या मूरत (दानिय्येल 3:2, 3) का प्रतिष्ठा (अभिषेक) किया जा सकता है। रॉय गेन ने इस शब्द के प्रयोग की खोज इस प्रकार की हैः

> कालांतर में *हेनुक्काह* शब्द का प्रयोग अरामी भाषा में द्वितीय मन्दिर की प्रतिष्ठा के लिए किया गया था (एज्रा 6:16-17)। जब सेल्यूसीद राजा एन्टिओकूस IV एपिफेन्स की दमनकारी सेना ने द्वितीय मन्दिर को अशुद्ध किया था, तो मक्काबियों द्वारा नई वेदी का जीर्णोद्धार व पुनः शुद्धिकरण स्मरणार्थ दिसंबर महीने में यहूदी अवकाश *हेनुक्काह* मनाया जाता है (1 मक्काबीज 4:52-59)।[4]

इस बात को ध्यान में रखते हुए **यहोवा ने मूसा से कहा** कि **वेदी के संस्कार के लिए प्रधान लोग अपनी-अपनी भेंट अपने-अपने नियत दिन पर चढ़ाएँ।**

आयतें 12-83. पुनरावृति के साथ, पाठ यह वर्णन करता है कि किस प्रकार बारह गोत्रों के प्रधानों ने वेदी की प्रतिष्ठा के लिए समरूप भेंट चढ़ाए। प्रथम प्रधान प्रथम दिन, द्वितीय प्रधान द्वितीय दिन, और इसी तरह बारी-बारी से पूरे बारह प्रधानों ने बारह दिनों में अपनी-अपनी भेंट चढ़ाई। ये वही प्रधान थे जिनके नाम 1:5-15 में क्रमानुसार अंकित है, और गोत्र भी उसी क्रमानुसार अध्याय 2 में अंकित किए गए हैं। इसी क्रम में वे मिलापवाले तम्बू के चारों ओर डेरा डालते थे और यात्रा भी इसी क्रम में करते थे। ये प्रधान **पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार भेंट लाते थे** जिनका विश्लेषण निम्नवत हैः

अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरा, एक सौ तीस **शेकेल चाँदी की 1 परात**
"अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरा," सत्तर **शकेल चाँदी का 1 कटोरा**
धूप से भरा हुआ दस **शेकेल सोने का 1 धूपदान**
होम बलि के लिए **1 बछड़ा, 1 मेढ़ा, 1 भेड़ी का बच्चा**
पापबलि के लिए 1 बकरा मेल बलि के लिए **2 बैल, 5 मेढ़े, 5 बकरे, 5 भेड़ी के बच्चे**

आयत 12 से 83 तक, पाठ इन भेंटों का विश्लेषण एक जैसे शब्दों में करता है (तुलना करें 1:20-43)। लेखक ने ऐसी पुनरावृति क्यों किया? इसका एक संभावित उत्तर यह हो सकता है कि आजकल के लेखों की तुलना में प्राचीन काल के लेखों में अधिक पुनरावृति इसलिए पायी जाती थी ताकि उनको स्मरण रखने

में आसानी हो। इससे बढ़कर, यह तथ्य कि चाहे गोत्र छोटा या बड़ा हो, सभी ने एक जैसे भेंट चढ़ाए जो यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि सभी गोत्र महत्वपूर्ण थे; हरेक गोत्र के लिए भेंट चढ़ाने के विशिष्ट दिन ठहराए गए थे। इसके साथ ही, पुनरावृति अनुभव की महत्वपूर्णता पर भी जोर देता है। चूँकि, हरेक दिन की भेंट को पहले से चढ़ाए गए भेंटों की ढेरी पर रखा जाता था तो मानो इसका सम्पूर्ण प्रभाव ऐसा होता था जैसे यह यहोवा परमेश्वर को चढ़ाए गए उत्कर्ष स्तुति हो।

आयतें 84-88. बारह गोत्रों द्वारा बारह दिनों तक चढ़ाए गए भेंटों की गणना अत्यधिक प्रभावशाली है, जिसकी गणना इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है। गोत्रों के प्रधानों ने **बारह चाँदी की परातें** चढ़ाई जिसमें प्रत्येक का वजन एक सौ तीस शेकेल था; **चाँदी के बारह कटोरे** जिसमें प्रत्येक का वजन सत्तर शेकेल था; और **सोने के बारह धूपदान** थे जिसमें प्रत्येक का वजन दस शेकेल था; और मैदा, तेल, और धूप के अलावा, बलिदान के लिए 252 जानवर लाए गए थे। ये **सारी** भेंट, **वेदी की अभिषेक के लिए** थी।

मिलापवाले तम्बू में परमेश्वर की मूसा से बातचीत (7:89)

[89]और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तम्बू में गया, तब उसने प्रायश्चित के ढकने पर से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करूबों के मध्य में से उसकी आवाज सुनी जो उससे बातें कर रहा था; और उसने (यहोवा) उससे बातें कीं।

आयत 89. यह अध्याय यह रेखांकित करते हुए समाप्त होता है कि परमेश्वर से बातें करने के लिए **मूसा** मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करता है। तम्बू के अंदर मूसा ने परमेश्वर की **आवाज सुनी जो**, **दोनों करूबों के मध्य में से**, **साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर था**। इस आयत से पहले जो कहा गया है और इसके पश्चात जो पाया जाता है, उन दोनों को एक दूसरे से कैसे संबंधित किया जा सकता है, इसके बारे में निर्णय करना कठीन है। इसकी एक संभावना यह है कि पूर्ववर्ती अनुच्छेद परमेश्वर की ओर से संदेश के साथ प्रारंभ होता है (7:11), और जो अनुच्छेद इसके **पश्चात** प्रारंभ होता है वह यह बताता है कि परमेश्वर ने मूसा से बातें की (8:1)। संभवतः इस आयत का अभिप्राय यह रहा होगा कि पाठक जानें कि परमेश्वर ने ये संदेश मूसा को कहाँ दिया था। रोनॉल्ड बी. एल्लन ने सुझाया कि यह आयत इस अध्याय का चर्मोत्कर्ष प्रस्तुत करता है। परमेश्वर ने लोगों द्वारा लाए गए "बहुमूल्य भेंट" का प्रत्युत्तर मूसा से बातें करके दी, जो निर्गमन 25:22 की प्रतिज्ञा की पूर्ति है।[5] किसी भी परिस्थिति में, इस पुस्तक के इस भाग में निवासस्थान पर दिया गया विशेष जोर से मेल खाता है।

अनुप्रयोग

“मनुष्य के साथ कोई पक्षपात नहीं” (अध्याय 7)

हरेक गोत्र चाहे छोटा या बड़ा, वेदी की प्रतिष्ठा के लिए एक ही प्रकार **की** भेंट लाया। मसीहियों को यह उदाहरण स्मरण कराना चाहिए कि “परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता है” (प्रेरितों 10:34; KJV); वह “पक्षपात नहीं दिखाना है।” एक मायने में, परमेश्वर सभी मसीहियों से एक ही बात की अपेक्षा नहीं करता है। हम में से कुछ लोग दूसरों से बढ़कर दे सकते हैं। हमें अलग-अलग तोड़े दिए गए हैं जो अलग-अलग तरीके से परमेश्वर की सेवा करने का सामर्थ प्रदान करता है। फिर भी, उद्धार पाने के लिए परमेश्वर सभी लोगों से एक ही बात की अपेक्षा करता है। धनी या निर्धन, जो भी हमारी जाति या राष्ट्रीयता या मांसिक या शारीरिक वरदान हो, उद्धार पाने के लिए हमसे मसीह में विश्वास और उसकी आज्ञा मानने की अपेक्षा की जाती है (मत्ती 7:21; मरकुस 16:16)। इसके साथ ही, जब हमारा उद्धार हो जाता है, तब प्रभु हरेक मसी**ही** से एक ही बात की अपेक्षा करता हैः वह हमसे निरंतर उसकी आराधना करने, खुशी से दान देने, धर्मी जीवन व्यतीत करने, और अपने वरदान - चाहे वे थोड़े या अधिक हों - उसकी सेवा में विश्वासयोग्यता के साथ प्रयोग करने की अपेक्षा करता है।

समाप्ति नोट्स

[1]इस अवलोकन को माना गया है परन्तु गिनती 9 में इसका वर्णन नहीं है। [2]डेनिस टी. ओल्सन, *गिनती,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविले: जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 44-45. [3]डब्लू. एस. मक्कुलग, “कार्ट,” दि *इंटरप्रेटर्स डिक्शनरी आफ द बाइबल,* संपादक जॉर्ज आर्थर बटरिक (नैशविलः अबिंदन प्रेस, 1962), 1:540. [4]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 549-50. [5]रोनॉल्ड बी. एल्लन, “गिनती,” *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री,* वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती,* संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 763.